

रोज तन्हाई में ये अशक भी बह जाते हैं³³³
 एक भूली हुई सी दास्ताँ-दोहराते हैं³³³³³

दिले तस्वीर में तेरा अकश बना बैठा हूँ ॥2॥
 अब तो ये हाल है अपना यूँ ही रह जाते हैं

एक भूली----- रोज तन्हाई-----

नकहा तूने कभी मुझसे रुबरु आकर³³³ ॥2॥
 इस गमे दौर में घीरे से वो कह जाते हैं

एक भूली----- रोज-----

ओ मेरी लाडली³³³ प्यारी³³³ सी तू दाती रानी³³³ ॥2॥
 जहाँने गम को भी चुपके से यों सह जाते हैं

एक भूली----- रोज-----

दिया सहारा तूने रेवा एक आले का³³³³ ॥2॥
 मिता जो प्यार तेरा आँसू भी न कह पाते हैं³³³

एक भूली----- रोज-----

जबसे हँसती हुई-आवाजें-सुनीं-तहरों की³³³³ ॥2॥
 जिगर ^{श्री बाबा श्री} नहीं-काबू में-कर पाते हैं³³³³

एक भूली----- रोज तन्हाई-----